

## हमारे सिद्धांत

1. परमात्मा एक है, वह ही परस्तिश (पूजने) के काबिल है.
2. आदमी की जिन्दगी का आदर्श यह है कि ईश्वर में लय हो जावे जो परम आनन्द, परम ज्ञान, परम सत का भण्डार है. यही उसका कमाल (श्रेष्ठता) है और यही आइडियल (आदर्श) है.
3. जिन तरीकों से इन्सान उसके हुज़ूर में रसाई हासिल करता है, उनको शास्त्रों की जबान में 'योग' कहते हैं. यह बहुत तरह के हैं जिनमें आध्यात्मिक योग सबसे ऊँचा और आसान है. जिसकी तालीम हमारे यहाँ दी जाती है.
4. इस आध्यात्मिक योग में तीन बातें खास हैं - सतगुरु की सौहबत, उसकी तालीम और अमल और उस पर ऐतकाद कुल्ली (पूर्ण विश्वास).
5. अभ्यासी को जहाँ तक हो सके गुरु की कुरबत हासिल करनी चाहिए, ताकि गुरु के असरात और गुरु की शक्तियाँ शिष्य में दाखिल हो सकें और वह उसके नूर से मुनब्बर हो सके.

0000000

## नियम

1. परमात्मा एक है और वही परस्तिश के काबिल है.
2. सारे ऋषि मुनि, संत औलिया, अवतार, पीर पैगम्बर, इन्सान को परमात्मा की तरफ ले जाने की तालीम करते चले आये हैं, गो उनके ज़ाहिरी उसूलों में कुछ थोड़ा-थोड़ा फ़र्क दिखाई देता है. इसलिए हमारा यह फ़र्ज़ है कि हर किसी पेशवाये दीन की इज़ज़त करें और दिल में उनके लिए कोई बुरा ख़याल न लावें. हर किताब से मुफीद हासिल करें. जो बात समझ में न आवे या गलत मालूम हो उसको अपने अक्ल से ख़याल न फरमायें और किसी वाक्फ़िकार से दरयाफ़्त करें, लेकिन गलत मज़हबी झगड़ों से अपने आप को अलहदा रखें.
3. फ़िज़ूल बातें करना, बहस मुबाहिर्सों में लगना, जहाँ ईश्वर की चर्चा न हो ऐसे दुनियादारों की सौहबत में बैठना, किसी मज़हबी सोसाइटी का मेम्बर बनकर राग द्वेष में फँसना, वगैरा जो बातें साधन के लिए मुज़िर होती हैं उनसे बचना चाहिए.

4. जो शख्स जिस क़ौम और मज़हब-ओ-मिल्लत का हो उसको अपने यहाँ के मज़हबी या क़ौमी रसूमात के अदा करने की पूरी आज़ादी है. यह साधन मन को एकाग्र करने में सहायक होते हैं ताकि वह ईश्वर दर्शन करने के काबिल बन सके.

5. मज़हबी कैदों से अपने आपको ऊँचा उठाने की हमेशा कोशिश करना चाहिए और जहाँ तक हो सके ब्रॉड माइंड ( broad mind ) होना चाहिए.

6. सदाचारी बनना, झूठ न बोलना, हक़- हलाल की कमाई पर गुज़ारा करना, दिल-आज़ादी से बचना, ज़रूरत मंदों की मदद करना, तमाम स्त्रियों को माँ समझना, नेक खसलतें हैं. इनको क़बूल करना चाहिए. जुआ खेलना, चोरी, झूठ, धोखा, रिश्वत, सूदखोरी, दिल आज़ादी, पर-स्त्री गमन वगैरा-२ बुरी आदतें हैं, इनसे बचना चाहिए. तामसी चीज़ें, जैसे गोश्त, शराब ,भांग, सिगरेट, हुक्का, बीड़ी, वगैरा, तमाम मनाश्यात (नशाँ) से साधक को बचना चाहिए. वगैर इन बातों को अमल में लाये हुए साधन में तरक्की नामुमकिन है.

7. हमारा तरीक़ा ख़ालिस प्रेम का मार्ग है. सबको अपना समझो, किसी को ग़ीबत (दुराब) मत करो, दूसरों के ऐब न सुनो. एबपोशी एक ऐसी अच्छी आदत है कि जिससे उसकी रहमत बरसती है.

8. आमदनी का 1/32वां हिस्सा ईश्वर के नाम पर ख़ैरात का निकालो. इस रूपये से विधवा, यतीम, गरीब, तालिबेइल्म, भूखे, मरीज़ या जिसको तकलीफ में देखो उसकी मदद करो और सत्संग के कामों में खर्च करो ताकि इस विद्या का प्रचार हो सके.

00000000

## कवायद नियम बराये सत्संगी साहबान

1.सूरज निकलने से पहले उठना.

2. ज़रूरीयात (नित्यकर्म ) से फारिग हो जाने के बाद नहाना, अगर किसी ख़ास वजह से बीमारी, कमज़ोरी वगैरा से गुसल नहीं किया जा सकता है तो हाथ-पाँव वगैरा को काफी तौर से साफ़ करना और धोती बदल लेना.

3. जो शग़ल बताया गया है उसको करना.

4. सत्संग यदि कहीं होता है तो वहाँ जाने की कोशिश करना और सत्संग नहीं है या जाया नहीं जा सकता तो बतलायी हुई किताबों का पाठ करना.
5. शाम को सूरज छिपने पर हाथ मुँह धोकर संध्या करना और ईश्वर प्रार्थना करना.
6. रात को सोने से पहले प्रार्थना करना और अगर मुमकिन हो तो बारह बजे दोपहर और चार बजे शाम को प्रार्थना करना.
7. रात को मय तमाम बच्चों वगैरा के कीर्तन करना और किसी बतलायी हुई किताब या रामायण का पाठ करना.
8. जो अभ्यास बतलाया गया है उसको मुतवातिर जब फुरसत दिन -रात में हो बराबर करते रहना

00000000